SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शेखर जोशी की कहानियों में निम्न वर्गों का संघर्ष

घनश्याम, शोधार्थी, हिंदी विभाग
कल्याण स्ना. महा. भिलाई, नगर जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
अटल बिहारी वाजपेयी शास. महाविद्यालय, पांडातराई, जिला कबीरधाम, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

घनश्याम, शोधार्थी, हिंदी विभाग
कल्याण स्ना. महा. भिलाई, नगर
जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
अटल बिहारी वाजपेयी शास. महाविद्यालय, पांडातराई,
जिला कबीरधाम, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 03/08/2022
Plagiarism : 01% on 28/07/2022

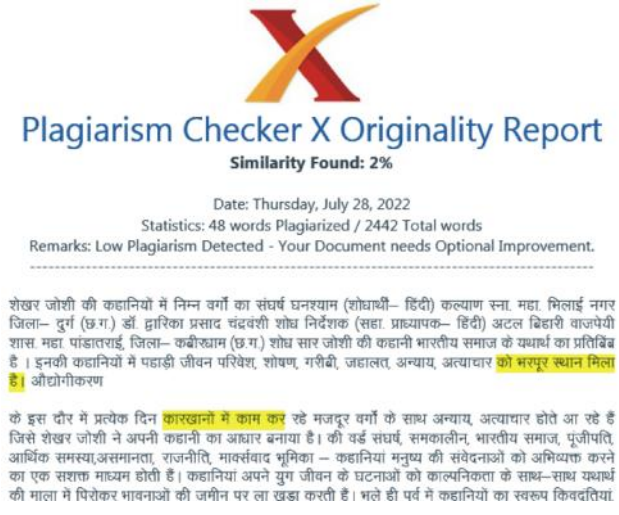

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Thursday, July 28, 2022
Statistics: 48 words Plagiarized / 2442 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

शेखर जोशी की कहानियों में निम्न वर्गों का संघर्ष घनश्याम (शोधार्थी– हिंदी) कल्याण स्ना. महा. भिलाई नगर जिला– दुर्ग (छ.ग.) डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी शोध निर्देशक (सहा. प्राध्यापक– हिंदी) अटल बिहारी वाजपेयी शास. महा. पांडातराई, जिला– कबीरधाम (छ.ग.) शोध सार जोशी की कहानी भारतीय समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब है। इनकी कहानियों में पहाड़ी जीवन परिवेश, शोषण, गरीबी, जहालत, अन्याय, अत्याचार को भरपूर स्थान मिला है। औद्योगीकरण

के इस दौर में प्रत्येक दिन कारखानों में काम कर रहे मजदूर वर्गों के साथ अन्याय, अत्याचार होते आ रहे हैं जिसे शेखर जोशी ने अपनी कहानी का आधार बनाया है। की वर्ड संघर्ष, समकालीन, भारतीय समाज, पूंजीपति, आर्थिक समस्या,असमानता, राजनीति, मार्क्सवाद भूमिका – कहानियां मनुष्य की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होती हैं। कहानियां अपने युग जीवन के घटनाओं को काल्पनिकता के साथ–साथ यथार्थ की माला में पिरोकर भावनाओं की जमीन पर ला खडा करती हैं। भले ही पर्व में कहानियों का स्वरूप किवदंतियां

शोध सार

जोशी की कहानी भारतीय समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब है। इनकी कहानियों में पहाड़ी जीवन परिवेश, शोषण, गरीबी, जहालत, अन्याय, अत्याचार को भरपूर स्थान मिला है। औद्योगीकरण के इस दौर में प्रत्येक दिन कारखानों में काम कर रहे मजदूर वर्गों के साथ अन्याय, अत्याचार होते आ रहे हैं जिसे शेखर जोशी ने अपनी कहानी का आधार बनाया है।

मुख्य शब्द

संघर्ष, समकालीन, भारतीय समाज, पूंजीपति, आर्थिक समस्या, राजनीति.

भूमिका

कहानियां मनुष्य की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होती हैं। कहानियां अपने युग जीवन के घटनाओं को काल्पनिकता के साथ–साथ यथार्थ की माला में पिरोकर भावनाओं की जमीन पर ला खड़ा करती हैं। भले ही पूर्व में कहानियों का स्वरूप किवदंतियां, दंत कथाएं और किस्सागोई रहा हो या फिर इसे आधार बनाकर निर्मित की गई हो, परंतु वर्तमान में कहानियों का विशुद्ध यथार्थ घटनाओं को केंद्र में रखकर लिखी जाती हैं। अब कहानियां कल्पनाओं का नहीं वरन संवेदनाओं का माध्यम बन चुकी है। समकालीन कहानियों में इसका स्वरूप देखा जा सकता है। समकालीन साहित्यकार अपने अनुभव को यथार्थ के गर्भ से निकालकर कहानी में स्थापित करते हैं, ताकि आम जनमानस को समाज में फैले हुए विसंगतियों से परिचित करा सकें। स्वतंत्रता पूर्व जो धारणा बनी हुई थी वह स्वतंत्रता पश्चात भंग हो जाती है। मजदूर, किसान, कामगार वर्गों ने जो सोचा था वह नहीं हो पाया, इन भोले–भाले लोगों

को तब लगता है कि ये भी वही है और कह उठते हैं किः देश में एक अंग्रेज चले गए दूसरा अंग्रेज छोड़कर। शेखर जोशी ऐसे ही किसान, गरीब–मजदूर और पहाड़ी वर्गों की बात करता है जिनका कल–कारखाने में पूंजीपति वर्गों द्वारा शोषण किया जाता है, वह जोशी जी की कहानियों में दिखाई देती है। जोशी जी अपनी कहानियों में युगीन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष गवाह के रूप में वर्णन करते हैं। जैसा वे देखते हैं वैसा वे लिखते भी हैं उसमें कोई कोरी कल्पना का स्वाद नहीं डालते। जोशी जी ने अपनी कहानियों का केंद्र बिंदु भारतीय समाज के निम्न मध्यमवर्गीय परिवार को बनाया है। कारीगर वर्गों के जीवन में जो आर्थिक समस्या आती है जिसके कारण उनके जीवन में उथल–पुथल मच जाता है, उस सत्य का रेखांकन करते हैं। पूंजीपति वर्ग अपनी तरक्की तो करता है, लेकिन मजदूर वर्गों की तरक्की या उसकी व्यवस्था को सुधारने की कोशिश कदापि नहीं करता, जिसके कारण मजदूर वर्ग धीरे–धीरे और गरीबी की चपेट में आ जाते हैं। जोशी जी ने अपनी कहानियों में कामगार, मजदूर, किसान वर्गों का पूंजी पतियों के द्वारा जो शोषण किया जा रहा है, उस शोषण को ध्यान में रखकर कहानियों की नींव रखी है। जोशी जी कल्पना का सहारा न के बराबर लेते हैं और वह एक प्रत्यक्ष दृष्टा के रूप में जो देखते हैं उसे उकेर देते हैं। शेखर जोशी की कहानी भारतीय समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब है। इनकी कहानियों में पहाड़ी जीवन परिवेश, शोषण, गरीबी, जहालत, अन्याय, अत्याचार को भरपूर स्थान मिला है। औद्योगीकरण के इस दौर में प्रत्येक दिन कारखानों में काम कर रहे मजदूर वर्गों के साथ अन्याय, अत्याचार होते आ रहे हैं जिसे शेखर जोशी ने अपनी कहानी का आधार बनाया है।

शेखर जोशी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शेखर जोशी का जन्म सन् 1932 ईस्वी को अल्मोड़ा जनपद के एक छोटे से गांव ओलिया में हुआ था। यह गांव प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र रहा है। यह छोटे–छोटे किसानों का गांव है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर और देहरादून में हुई। प्रमुख प्रकाशित कृतियांः कोसी का घटवार, साथ के लोग, हलवाहा, नवरंगी बीमार है, मेरा पहाड़, प्रतिनिधि कहानियां, बच्चे का सपना आदि हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, चेक, रूसी, पोलिश् और जापानी भाषाओं में कहानियों का अनुवाद हुआ है। शेखर जोशी ने लगभग 75 से 80 कहानियां लिखी हैं, जिनमें कहानियों की कथानक की विविधता स्पष्ट रूप से हमारे सामने परिलक्षित होती हैं। शेखर जोशी अपने लेख 'जनता' के लिए लिखना ही प्रतिबद्धता में लिखते हैं' ''मैं बहुत अधिक लेखन नहीं कर पाया हूं, जीवन की स्थितियां ही कुछ ऐसी रहीं लेकिन जो कुछ लिखा है, वह कहां तक मुकम्मल रचना है और कहां तक कलाकृति यह मैं नहीं जानता।''[1]

शेखर जोशी की कहानियों में निम्न वर्ग की समस्याएं

1. वर्ग समस्या की अवधारणा।
2. शेखर जोशी की कहानियों में सामाजिक समस्या।
3. शेखर जोशी की कहानियों में आर्थिक समस्या।
4. शेखर जोशी की कहानियों में राजनीतिक समस्या।

1. **वर्ग समस्या की अवधारणाः** मानव समाज का विकास एक लंबी प्रक्रिया से होकर गुजरती हुई आज इस अवस्था पर पहुंची है। आज मानव समाज जो भी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, संस्कार पर पलती बढ़ती आ रही है, उसका इतिहास बहुत प्राचीन है। आदिमानव काल से लेकर वर्तमान मानव तक का इतिहास बहुत ही उतार–चढ़ाव और परिवर्तन का काल रहा है। प्रत्येक मानव की बुद्धि, कार्यक्षमता व सभ्यता अलग–अलग होती है। वर्तमान ही नहीं वरन भूतकाल से ही मानव समाज में असमानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती आ रही है। यह असमानता कई रूपों में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। नई कहानी आंदोलन के एक प्रमुख हस्ताक्षर शेखर जोशी की कहानियों में निम्न वर्गों की यथास्थिति को भलीभांति वर्णित किया गया है। उनकी कहानियों में निम्न वर्गों की समस्या को यथास्थिति समझने का प्रयास करेंगे। शेखर जोशी जी अपनी कहानियों में समाज में फैली हुई विसंगतियों को कहानी की विषय वस्तु का आधार बनाते हैं। शेखर जोशी अपनी कहानियों में मुख्यता कारीगर की जीवन में उत्पन्न होने वाली आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं को बड़े ही मार्मिक चित्रों के साथ अभिव्यक्त करते हैं।

2. **शेखर जोशी की कहानियों में सामाजिक समस्याः** शेखर जोशी ने आजादी के बाद से लिखना प्रारंभ किया। कोई भी लेखक, कवि, रचनाकार, इतिहासकार या कहानीकार अपने समाज के परिवेश और यथार्थ से कोई न कोई रूप से जुड़ा ही रहता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में अनेक सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हुए। समाज में लगभग सभी पुरानी मान्यताओं तथा सामाजिक व्यवस्थाओं में धीरे–धीरे परिवर्तन आया है। समाज का ढांचा बदला है, जिससे लोगों के रहन–सहन, वेश–भूषा, आचार–विचार और व्यवहार में भी बहुत परिवर्तन आया है। संपूर्ण सामाजिक परिवेश ने नगरीय तथा ग्रामीण दोनों स्तरों पर एक नया रूप धारण किया है।

शेखर जोशी की एक प्रसिद्ध कहानी प्रश्नवाचक आकृतियां सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। कहानी में सामाजिक परिवेश में हस्तक्षेप किया गया है। कहानी के प्रमुख पात्र वीरेंद्र से पीसीएस नौकरी के इंटरव्यू में पूछा जाता है कि तुम्हारे राजनीतिक विचार क्या है? तो वह कहता है, ''नौकरी पाने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति यहां राजनीति पर एक ही प्रकार से अपना मत प्रकट करता होगा वास्तविक जीवन के शब्दकोश में शायद समझौता का अर्थ ही सफलता है।''[2]

इसी भारतीय समाज में एक ओर कारखाने और मिल मालिक हैं, तो दूसरी ओर उन में काम करने वाले श्रमिक वर्ग। एक के पास खाने–पीने के लिए पर्याप्त साधन है तो दूसरा दाने–दाने के लिए मोहताज है। शेखर जोशी की प्रसिद्ध कहानी कोसी के घटवार में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है – ''कुछ साग–सब्जी होती, तो बेचारा एक आधी–रोटी और खा लेता'' गुसाई ने बच्चे की ओर देखकर अपनी विवशता प्रकट की।

''ऐसे ही खाने–पीने वाले की तकदीर लेकर पैदा हुआ होता, तो मेरे भाग क्यों पड़ता ? दो दिन से घर में तेल–नमक नहीं है।''[3]

शेखर जोशी की कहानी बदबू में कारखाने में काम कर रहे श्रमिक वर्ग की बदहाली और निम्न सामाजिक जीवन को देखा जा सकता है। कोई भी रचनाकार अपने सामाजिक परिवेश को कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में अंकित करता ही है।

3. **शेखर जोशी की कहानियों में आर्थिक समस्याः** भारतीय समाज में आर्थिक असमानता अभी की देन नहीं है यह बहुत प्राचीन काल से विद्यमान है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिनमें कुछ संकट पहले से थे कुछ स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न हुए। समाज की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए भारतवर्ष में कई योजनाएं बनाए गई, परंतु तक देश की आर्थिक असमानता दूर नहीं हुई है बल्कि यह बढ़ती ही जा रही है। एक वर्ग कारखानों के मालिक हैं तो दूसरा वर्ग कारखानों में काम करने वाले गरीब मजदूर श्रमिक हैं। इन श्रमिकों को बहुत ही कम वेतन पर काम में रखा जाता है, जिससे इनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय रहती है। यह अपनी मूलभूत सुविधा जैसेः रोटी, कपड़ा और मकान की भी व्यवस्था नहीं कर पाते। शेखर जोशी स्वतंत्रता के बाद से लिखना प्रारंभ करते हैं। भला कोई कहानीकार अपने समाज के आर्थिक दरिद्रता से दूर कैसे जा सकता है? शेखर जोशी जी ने समाज के आर्थिक विषमता को बखूबी अपनी कहानी में जगह दिया है। शेखर जोशी स्वयं एक लंबे अरसे तक कारखानों से जुड़े रहे, उन्होंने इस आर्थिक असमानता को दूर से सुना ही नहीं वरन करीब से देखा है और उसको अनुभव किया है और इस अनुभव और संवेदना को उन्होंने अपनी विभिन्न कहानियों में अंकित किया है।

समाज के निम्न वर्ग को अपने जीविकोपार्जन के लिए बद से बदतर कार्य को भी करना पड़ता है, चाहे वह बदबू भरे माहौल ही क्यों ना होः ''सहसा एक विचित्र आतंक से उसका समूचा शरीर सिहर उठा उसे लगा जैसे आज वह भी घासी की तरह इस बदबू का आदी हो गया है, उसने चाहा कि वह एक बार फिर हाथों को सूंघ ले लेकिन उसका साहस न हुआ। परंतु फिर बड़ी मुश्किल से वह दोनों हाथों को नाक तक ले गया और इस बार उसके हर्ष की सीमा न रही। पहली बार उसे भ्रम हुआ था हाथों में केरोसिन तेल की बदबू अब भी आ रही थी।''[4]

शेखर जोशी ने शहरी और ग्रामीण दोनों वर्गों की घोर आर्थिक असमानता पर कई सारी कहानियां लिखी हैं।

शेखर जोशी ने मजदूर वर्ग (निम्न वर्ग) पर बहुत कहानियां लिखी हैं। उनमें मुख्यता बदबू, सीढ़ियां, उस्ताद, मेंटल, आखरी टुकड़ा, जी हजूरिया, गलता लोहा, डांगरी वाले, नवरंगी बीमार है आदि कहानियों में औद्योगिक जीवन के घोर संकट को दर्शाया गया है। गरीबी में जीवन किस तरह कटती है और औद्योगिक कारखानों में काम करने वाले श्रमिक कैसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उसे शेखर जोशी ने लिपिबद्ध किया है।

निम्न वर्ग की गरीबी और जहालत शहरों में ही नहीं पाई जाती वरन गांव में भी विद्यमान है। कोई गरीब आदमी को एक छोटे से दुकान खोलने के लिए घास–फूस और तिनके का सहारा लेना पड़ता है, इनकी गरीबी और मजबूरी इससे साफ झलक उठती है।

''जंगलात की सड़क के किनारे, पहाड़ी रास्ते की चढ़ाई पर, चीड़ के पत्तों का छप्पर डालकर देबिया ने चाय की दुकान खोली थी। दो–चार बीड़ी के बंडल, दियासलाई और चना–गुड़–मिश्री थैले में रखकर देबिया सुबह ही घर से चला आता। अनगढ़ पत्थरों के चूल्हे में चिटख–चिटखकर जल्दी चीड़ की लकड़ियों के ऊपर काली बटलोई में पानी उबलता रहता।''[5]

कारखाने में काम करने वाले मजदूर बहुत मजबूर होते हैं, उन्हें खाना पीना भी ठीक से नसीब नहीं होता। कारखानों में काम करने वाले अपने हाथों को ठीक से धो भी नहीं पाते, उनको बदबू भरे हाथों से खाना खाना पड़ता है। शेखर जोशी की कहानी बदबू में एक उदाहरण देखिए: ''एक बड़े टब में घटिया किस्म का केरोसिन तेल रखा हुआ था। दोनों ने अपने हाथों को कुहनी–कुहनी भर उसमें डूबा कर मला। अब हथेलियों और बाहों में लिपटी सारी चिकनी कालिक धुल गई थी, परंतु उसे लगा जैसे दोनों बांहों में अदृश्य चींटियां रेंग रही हों। केरोसिन तेल की गंध के कारण उसका जी मिचला उठा इस खीझ और गंध से मुक्ति पाने के लिए वह नल की ओर चल दिया।''[6]

4. **शेखर जोशी की कहानियों में राजनीतिक समस्याः** समाज और राजनीति एक दूसरे के अभिन्न अंग है। समाज किसी ने किसी रूप से राजनीति से प्रभावित रहता ही है। हमारा भारत देश सन् 1947 में आजाद हुआ इसके पहले यहां अंग्रेजों का शासन था। सन् 1947 में देश की आजादी के साथ–साथ देश विभाजन की त्रासदी एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सम्मुख आ खड़ी हुई। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और इसी समाज में साहित्य भी है और राजनीति भी। शेखर जोशी ने स्वतंत्रता पश्चात लिखना प्रारंभ किया। जोशी जी नई कहानी आंदोलन के एक प्रमुख सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी कहानियां भारतीय राजनीति से विलग नहीं हो सकी भारत में समाजवाद की स्थापना नहीं हो पाई जिसके कारण भारत देश में पूंजीवादी व्यवस्था हावी हो गई। स्वतंत्रता उपरांत कई सारी महत्वपूर्ण योजनाएं चलाई गई जैसे पंचवर्षीय योजना। पंचवर्षीय योजनाओं में कई सारे कारखाने स्थापित किए गए परंतु इन कारखानों ने दो वर्गों की स्थापना की एक मजदूर वर्ग जो कारखानों में काम करते थे और दूसरा मालिक वर्ग जो कारखानों में काम करवाते थे। शेखर जोशी की कई कहानियों को पढ़ने के बाद मार्क्सवाद की याद आ जाती है। शेखर जोशी की कई कहानियों जैसेः बदबू, मेंटल, नवरंगी बीमार है, गलता लोहा, उस्ताद, आर्शीवचन, डांगरी वाले आदि में सर्वहारा मजदूर वर्ग की दयनीय स्थिति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन श्रमिकों की दयनीय स्थिति का जिम्मेदार देश की घटिया राजनीति भी है।

निष्कर्ष

निम्न वर्गों के जीवन यथार्थ को समझने के लिए शेखर जोशी की कहानी अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होती है। नई कहानी आंदोलन के एक प्रमुख हस्ताक्षर शेखर जोशी स्वयं एक लंबे समय से कारखानों में कार्य करते रहे और उन्हें स्वयं कारखाने में काम करने का अनुभव भी है। उन्होंने श्रमिकों की स्थिति को देखा ही नहीं वरन स्वयं अनुभव भी किया है। शेखर जोशी श्रम और संघर्ष के कहानीकार हैं। उनकी कहानियां समाज की वास्तविकता को दर्शाती हैं वह कहानी लेखन में यथार्थ के बहुत करीब हैं। शेखर जोशी की कहानियां पाठक के मन को झकझोर के रख देती हैं। शेखर जोशी नई कहानीकार तो हैं ही इन्होंने दर्जनों कहानियां लिखी हैं। कहानी के साथ–साथ इन्होंने शब्द चित्र, काव्य चित्र, रिपोर्ताज, संस्मरण आदि पर भी कलम चलाई है। इन सभी विधाओं के साथ–साथ और वर्तमान के परिदृश्य को सामने में रखते हुए शेखर जोशी हिंदी साहित्य जगत में एक कथाकार के रूप में अमर हो

गये हैं। उनकी कहानियां कथा साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. जोशी, शेखर. स्मृति में रहें वे. हापुड़, संभावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010, पृष्ठ 191।
2. जोशी, शेखर. संकलित कहानियां. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दूसरा संस्करण 2011।
3. जोशी, शेखर. *कोसी का घटवार.* इलाहाबाद, नया साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण जुलाई 1958। पृष्ठ 89।
4. जोशी, शेखर. *संकलित कहानियां.* नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दूसरा संस्करण 2011। पृष्ठ 147
5. जोशी, शेखर. *स्मृति में रहें वे.* हापुड़, संभावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010, पृष्ठ 26।
6. जोशी, शेखर. *संकलित कहानियां.* नई दिल्ली रू नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दूसरा संस्करण 2011, पृष्ठ 139।

****